Donated by Dr N D Khanna, Ex Director
डॉ. एन. डी. खन्ना, भूतपूर्व निदेशक द्वारा दान की गई

भाकृअनुप
ICAR

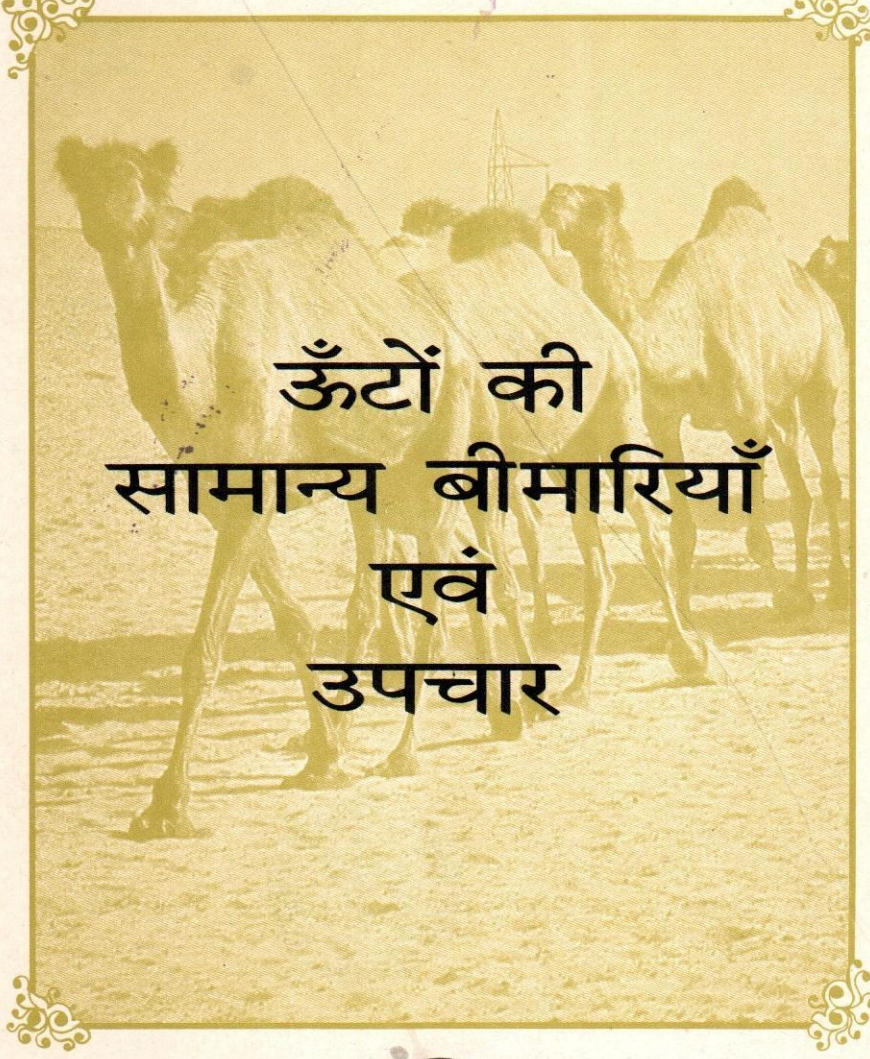

ऊँटों की सामान्य बीमारियाँ एवं उपचार

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़ शिवबाड़ी
बीकानेर

ICAR

ऊँटों की सामान्य बीमारियाँ एवं उपचार

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़ शिबबाड़ी
बीकानेर

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक

परियोजना निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी,
बीकानेर 334001

मुद्रक

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रिंटर्स
बिस्सों का चौक
बीकानेर 334001

ऊँटों की सामान्य बीमारियाँ एवं उपचार

1. **दस्त लगना**—साधारणतया ऊँट मींगने करता है। लेकिन जब दस्त लगते हैं तब ऊँट मींगने न करके पतला गोबर करता है। कभी-कभी पतले गोबर के साथ आँव एवं खून भी देखने को मिलता है। ऊँटों में दस्त मात्र चारे में परिवर्तन से भी लग जाते हैं जो या तो एक दो रोज में अपने-आप ठीक हो जाते हैं अन्यथा उपचार की आवश्यकता होती है।

दस्त बेक्टीरिया अथवा परजीवी कृमि की वजह से भी लग सकते हैं। इस प्रकार से लगे दस्तों में खून एवं आँव भी आ सकती है एवं कभी-कभी बुखार भी हो सकता है।

उपचार (वयस्क ऊँट के लिए औषधि)

1. **साधारण दस्त**

1. नेबलॉन पाउडर	50-100 ग्राम, अथवा
2. डायरडॉन पाउडर	50-100 ग्राम, अथवा
3. डायरिया किलर	50-100 ग्राम

2. **आँत एवं पेट के परजीवी के कारण लगे दस्त हेतु**—साधारण दस्त की दवा के साथ

पानाकुर	10 से 12 ग्राम, अथवा
नीलवर्म	15 से 20 ग्राम, अथवा
हेलाटेक	60 से 100 ग्राम

यह दवा खाली पेट देनी चाहिए। तथा 4-6 घण्टे बाद तक चारा नहीं देना चाहिए। दवा 2 से 3 सप्ताह बाद पुनः देनी चाहिए।

3. **बेक्टीरिया के कारण लगे दस्त**—साधारण दस्त में दी जानेवाली दवा के साथ

1. सल्फाडिमिडीन बोलस	25 से 40 ग्राम तक या 5 से 8 बोलस दिन में दो बार तीन दिन तक अथवा
2. एन्ट्रीमाबोलस	8 से 12 बोलस दिन में दो बार तीन दिन तक या
3. किमो जीन बोलस	8 से 12 बोलस दिन में दो बार तीन दिन तक

2. **अपचन**—इस बीमारी में ऊँट खाना बन्द कर देता है अथवा कम खाता है। यह चारा बदलने, घटिया किस्म का चारा खाने से, अधिक चारा या दाना खाने से अथवा समय पर चारा व पानी न देने से हो जाता है।

इसके उपचार हेतु निम्न दवा देनी चाहिए

1. हिमालय बत्तीसा	100 से 150 ग्राम
सोडा वाईकार्ब	100 से 150 ग्राम
	दिन में दो बार दो से तीन दिन तक

2. यदि साथ में कब्ज की भी शिकायत हो तो

मैगनिशियम सल्फेट	500 ग्राम
सोडियम क्लोराइड	500 ग्राम
सोडा बाइकार्ब	200 ग्राम

यदि जानवर कुछ भी न खाता हो तो साथ में बीकॉम्सलेक्स व लीवर एब्स-ट्रेक्ट का इन्जेक्शन एक दिन छोड़कर तीन बार लगवाना चाहिए।

3. **आफारा** —आफारा ऊँटों में बहुत कम देखने को मिलता है। इसमें बायीं तरफ से पेट फूल जाता है। हाथ लगाकर दबाकर देखें तो महसूस होता है कि पेट में हवा भरी हुई है। इस रोग से पीड़ित ऊँट भी खाना पीना बन्द कर देता है और साँस लेने में भी तकलीफ महसूस करता है।

उपचार

1. तारपीन का तेल मीठा तेल	50 से 60 मि॰ ली॰ और 250 से 400 मि॰ ली॰ मिलाकर पिलायें
2. ब्लोटोसिल	100 मि॰ ली॰ पिलाएँ अथवा
3. आफरोल या टिम्पोल	100 ग्राम से 150 ग्राम गुनगुने पानी के साथ पिलाएँ
4. फोरमेलीन टिंचर जिंजर पानी	15 से 20 मि॰ ली॰ 50 से 60 मि॰ ली॰ 500 मि॰ ली॰ तीनों मिलाकर पिलाना चाहिए

4. रयूमिनल इम्पेक्शन (पेट का बन्द पड़ना)—यह बीमारी भी ऊँटों में प्रायः देखने को मिलती है। यदि समय पर इलाज न किया जाय तो इस बीमारी से ऊँट की मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग भी घटिया किस्म का चारा देने से, चारे में बदलाव करने से या अधिक दाना अथवा गुड़ आदि खिलाने से हो जाता है।

इस रोग से पीड़ित ऊँट खाना पीना बन्द कर देता है। जुगाली नहीं करता है। कब्ज के लक्षण देखने को मिलते हैं। यदि मींगने करता है तो काफी सख्त मींगने करता है। बायीं ओर पेट पर हाथ लगाकर देखें तो पेट सख्त हुआ महसूस होता है। कभी-कभी ऊँट पेट में दर्द महसूस करता है।

उपचार

मैगनीशियम सल्फेट	500 से 1000 ग्राम
सोड क्लोर (नमक)	500 ग्राम एवं
सोडियम बाइकार्बोनेट	200 ग्राम एक साथ मिलाकर पिलावें।
साथ में इन्जेक्शन बेलामिल	5 मि० ली० भी लगवाना चाहिए।

5. जर का न गिरना (रीटेन्ड प्लासेन्टा)—मादा ऊँट के बच्चा जनने के चार से छः घण्टे तक जर गिर जानी चाहिए। यदि छः घण्टे तक जर न गिरे तो उसका उपचार करना आवश्यक है।

उपचार

यूटेरोटोन	100 मि० ली० दिन में दो बार
फ्यूरिया बोलस	4 बोलस बच्चादानी के अन्दर तीन दिन तक
टेरामाइसीन इन्जेक्शन	30 से 50 मि० ली० 3 से 5 दिन तक

6. **पाँव या खुजली**—यह बीमारी चमड़ी का रोग है जोकि बाह्य परजीवी की वजह से होता है। यह दो प्रकार के होते हैं।

1. **सारकोपटिक मेंज**—सारकोपटिक टाइप की मेंज में परजीवी ऊँट की चमड़ी के अन्दर गुफाएँ बना लेते हैं अतः चमड़ी पर दवा लगाने का अधिक असर नहीं होता। इन गुफाओं के अन्दर ही ये परजीवी अण्डे देते रहते हैं व बढ़ते रहते हैं।

2. **सारोपटिक मेंज**—ये परजीवी चमड़ी के भीतर न जाकर बाहर ही रहते हैं। इससे होनेवाली पाँव व खाज सारे शरीर पर न होकर चकतों के रूप में उभरती है। इसे स्कबीज कहते हैं। दवा लगाने पर जल्द ही ठीक भी हो जाती है।

लक्षण

दोनों प्रकार की पाँव (मेंज) में ऊँट के बाल धब्बों में झड़ जाते हैं। ऊँट बेचैन रहता है व शरीर को किसी चीज जैसे दीवार, वृक्ष अथवा अपने पीछे के पैरों से रगड़ता रहता है। अपने मुँह से अपने-आपको काटने लगता है अतः खून आने लगता है। चमड़ी सूखने लगती है व रंग काला पड़ने लगता है। ऊँट खाना-पीना कम कर देता है एवं वजन तेजी से घटने लगता है। चमड़ी से खून बहने लगता है व घाव भी हो जाते हैं।

उपचार

सोरोपटिक मेंज—बेनजाइल बेन्जोऐट लोशन शरीर पर लगाना चाहिए अथवा गामा बी० एच० सी० अथवा गेमेक्सीन का घोल 0.03—0.04% सावधानी से लगाना चाहिए।

सारकोपटिक मेंज—आरगेनो फास्फोरस कम्पाउण्ड के घोल से स्प्रे करना चाहिए।

1. मेलाथिऑन .02 से .04% घोल अथवा

2. गामा बी० एच० सी० या गेसेक्सीन .03 से .04% घोल केवल सल्फर लगाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता है।

3. इन्जेक्शन आइवरमेक्टिन 1 मि० ली० /50 कि० ग्राम वजन पर

7. **आंतरिक परजीवी प्रकोप**—ऊँटों के पेट व आँत में कई प्रकार के परजीवी पाये जाते हैं जैसे गोलकृमी, फीताकृमी, सिस्टोइस इत्यादि। इससे ऊँट कमजोर होने लगता है। बाल भी उड़ने लगते हैं। बाल व चमड़ी अपनी चमक खो देते हैं। दस्त भी लगते हैं, जिसमें बदबू आती है ऊँट धीरे-धीरे कमजोर होता जाता है।

उपचार

साल में दो बार पेट के कीड़े मारने की दवा देनी चाहिए। इस हेतु ब्रॉड स्पेक्ट्रम एन्थलमेंटिक काम में लेना चाहिए। जैसे—नीलवर्म, पानाकुर, वरमिन बोलस, हेलाटेक इत्यादि। दवा की मात्रा शरीर में वजन के अनुसार देनी चाहिए।

8. **सर्रा अथवा तिबसां (ट्रिपेनोसोमियासिस)**—यह एक ऊँटों में पाया जाने-वाला भयंकर जानलेवा रोग है। यह रोग ट्रिपेनोसोमा इवानसाई नासक रक्त परजीवी प्रोटोजुआ के कारण होता है। यह परजीवी ऊँट के शरीर में एक विशेष प्रकार की मक्खी के काटने पर प्रवेश करता है।

लक्षण

ऊँट का वजन कम होना, आँखों की झिल्ली का सफेद हो जाना, कभी-कभी बुखार होना, आँखों से गीड एवं आँसू बहना, आँखों के ऊपरी हिस्से एवं शरीर के नीचे के हिस्सों में सूजन आना जैसे एडर के चारों तरफ, पेरिनियल भाग में। मादा ऊँट गर्भ भी गिरा देती है। यह रोग तीव्र (एक्यूट) एवं दीर्घकालीन (क्रोनिक) दोनों ही प्रकार का होता है। दीर्घकालीन रोग में बुखार बहुत कम होता है अथवा नहीं होता है। इस रोग से पीड़ित ऊँट मींगने भी छोटे व तिकोने आकार के करता है। कभी-कभी दस्त भी लग सकते हैं।

उपचार

1. नागानोल	10 ग्राम, 15 ग्राम, 3 ग्राम, 2 ग्राम तीन हिस्सों में तीन दिन के अन्तराल से।
2. टीवेन्सी	2.5 ग्राम

3. ट्राइवेक्सीन	2.5 ग्राम (ये दवाई बचाव व इलाज दोनों रूप में दी जा सकती है मात्रा शारीरिक भार के अनुरूप देते हैं।

9. **एन्थ्रेक्स**—यह एक जान लेवा रोग है। यह रोग इएन्थ्रासिस बेसिलस नामक कीटाणुओं से होता हैं। यह एक भयंकर संक्रामक रोग है जो कि ऊँट से मनुष्य में भी हो जाता है जिससे मनुष्य के शरीर पर मवाद भरी फुंसियाँ हो जाती हैं।

लक्षण

तेज बुखार, ऊँट अपनी गर्दन व सिर को जमीन पर टेककर बैठता है। पेट में दर्द भी महसूस करता है। कभी-कभी तो बिना किसी लक्षण के दिखाये ही ऊँट की मृत्यु हो जाती है। जानवर की मृत्यु 2 से 4 घण्टे के भीतर हो जाती है।

उपचार

इस रोग से बचाव हेतु रोग प्रतिरोधक टीका लगवा लेना चाहिए, जो कि पशु-चिकित्सालय में लगाया जाता है। रोग प्रतिरोधक टीका क्षेत्र में बीमारी की सूचना होने पर ही लगवाना चाहिए।

1. पेनिसिलिन इन्जेक्शन	40 लाख से 80 लाख आई० यू० दिन में दो बार 5 दिन तक अथवा
2. इन्जेक्शन एम्पीसीलीन आइ/वी०	3 ग्राम से 4 ग्राम तक 6 घण्टे के अन्तराल से 5 दिन तक अथवा
3. सल्फाडिमीडीन 33.3%	30 मि० ली० / 50 कि० ग्राम भार पर आई/वी० दिन में दो बार सल्फा-डिमीडीन के साथ में पेनिसिलिन अथया एम्पीसीलीन के टीके लगाना अधिक उपयुक्त है।

10. **गलघोटू अथवा हिमोरेजिक सेप्टीसीमिया**—यह रोग ऊँटों में बहुत कम होता है। इस रोग से पीड़ित ऊँट के गले में सोजिश (सोजन) आ जाती है।

तेज बुखार व साँस लेने में तकलीफ होती है। यह भी एक संक्रामक रोग है जो कि गाय एवं भेड़ में अधिकतर होता है। इस रोग से बचाव हेतु रोग प्रतिरोधक टीका लगवाया जा सकता है।

उपचार

1. पेनिसीलिन इन्जेक्शन आई/एम
   40 लाख से 80 लाख आई० यू दिन में दो बार 5 दिन तक अथवा
2. सल्फाडिमीडीन 33.33% 30 मि० ली० /50 कि० ग्राम वजन पर दिन में दो बार 3 से 5 दिन अथवा पेनिसीलीन व सल्फाडिमीडीन एक साथ।

11. **सालमोनेलोसिस**—यह रोग बड़े सालमोनेला नामक रोगाणुओं के कारण होता है। यह प्राय बड़े ऊँट के बजाय ऊँट के बच्चों में अधिक होता है। इस रोग से पीड़ित ऊँट एवं ऊँट के बच्चों के दस्त लगते हैं। बुखार भी हो सकता है। ऊँट के बच्चों का यदि प्रभावी ढंग से उपचार न किया जाय तो मृत्यु भी हो जाती है।

उपचार

1. इन्जेक्शन क्लोरमफेनिकॉल
   5 मि० ग्राम/कि० ग्राम वजन 5 दिन तक
   यदि शरीर में पानी की कमी महसूस हो (ऊँट के बच्चों में) तो ग्लूकोज अथवा नारमल सेलाइन भी लगाना चाहिए।
2. एन्ट्रीमा, ओरिप्रिय अथवा वाकट्रिम बोलस
   बड़े ऊँट को 8 से 10 बोलस
   छोटे बच्चे को 1 से 2 बोलस तक दिन में दो बार 5 दिन तक

12. **निमोनिया**—निमोनिया का रोग साधारणतया सर्दी के मौसम में होता है। इस रोग के कारण भी ऊँट के बच्चों की मृत्यु दर बढ़ सकती है क्योंकि ऊँटों में जनन काल शीत ऋतु में ही होता है। इस रोग से पीड़ित ऊँट के शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है। नाक से पानी अथवा रेशा बहता है। साँस छोटे एवं कम गहरे एवं जल्दी-जल्दी लेता है। ऊँट को नाल देते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यदि, नाल ढंग से न दी जावे तो, नाल से दिया जानेवाला पदार्थ श्वासनली में चला

जाता है। इस प्रकार से होनेवाले निमोनिया को अलसूंड या ड्रेंचिंग निमोनिया कहते है।

उपचार

1. पेनीसिलीन इन्जेक्शन आई/एम०
   बड़े ऊँट को 40 लाख इकाई पाँच दिन तक
   छोटे बच्चे को 20 लाख इकाई पाँच दिन तक
   एविल या केडीस्ट्रीन इन्जेक्शन आई०/एम० 5 से 10 मि० ली०
   अथवा
2. सल्फाडिमीडीन 33.33%
   30 मि० ली० /50 कि० ग्राम वजन पर आधा आई०/वी० आधा एस०/सी० तीन से पाँच दिन तक एविल या केडिस्ट्रीन साँस में अधिक तकलीफ होने पर एड्रीनलीन इन्जेक्शन देते हैं।

13. **कन्टेजियस एक्थाइमा**—यह रोग भी एक खास किस्म के वायरस द्वारा ही होता है। इस रोग में होंठों पर व होंठों के किनारे पर छोटी फुंसियाँ बनने लगती हैं। इस रोग के कारण होंठ बुरी तरह से फट जाते हैं व मवाद भी भर जाती है। इस रोग का असर 7 से 10 दिन तक रहता है। ऊँट खाना पीना कम कर देता है।

उपचार

लाल दवा के हल्के घोल से मुँह व होंठ धोने चाहिएँ।
बोरोग्लीसरीन होंठों पर लगानी चाहिए। व साथ में ब्रॉड स्पेक्ट्रम एन्टीबायोटिक भी देना चाहिए। जैसे
टेट्रासाइक्लीन इन्जेक्शन 2 से 5 मि० ग्राम/कि० ग्राम वजन पर

14. **कैमल पॉक्स (ऊँटों में होनेवाली माता)**—इस रोग को माता या चेचक का रोग भी कहते हैं। यह रोग एक किस्स के वायरस द्वारा होता है। यह रोग एक भयंकर संक्रमक रोग है और सभी आयु के ऊँटों में हो सकता है। किन्तु छोटी उम्र के ऊँटों में होने की अधिक सम्भावना रहती है। इसका असर 2 से 4 सप्ताह तक रहता है। कई बार रोग के ठीक होने के पश्चात पैरों में कम्पन हो जाती है। इस रोग से ऊँट कमजोर हो जाता है।

लक्षण

शुरू में ऊँट के शरीर पर छोटे-छोटे लाल रंग के दाने विशेषकर होंठों पर, गुदा एवं जननांगों के चारों ओर एवं पैरों पर देखने को मिलते हैं जिन्हें पैप्यूल्स कहते हैं। कुछ समय पश्चात् ये पैप्यूल्स वेसिकल्स में बदल जाते हैं। जिन्हें फाले भी कहते हैं। इस फालों और वेसीकल्स में बाद में मवाद भर जाती हैं जिन्हें पसच्यूल्स कहते हैं। इनके सूखने पर छोटे-छोटे घाव से रह जाते हैं व खरूँट आ जाता है।

उपचार

माता हुए ऊँटों को अन्य ऊँटों से अलग रखना चाहिए।

1. टैट्रासाइक्लीन इन्जेक्शन आई०/एम० 2 से 5 मि० ग्राम/कि० ग्राम वजन पर, एवं जख्मों को लाल दवा से धोकर उन पर जिंक आक्साइड व बोरिक एसिड का मलहम लगाना चाहिए।

आलेख

यू० के० बिस्सा एवम् नरेन्द्र शर्मा

Donated by Dr. N. D. Khanna, Ex. Director
डॉ. एन. डी. खन्ना, पूर्व निदेशक द्वारा दान की गई

आलेख

यू. के. बिस्सा एवं नरेन्द्र शर्मा

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER